© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में उनके समायोजन क्षमता का अध्ययन

प्रो0 रघुराज सिंह
शोध–निर्देशक,
प्राचार्य, शिक्षक–शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

मणिमाला
(शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में उनके समायोजन क्षमता का अध्ययन'' है। प्रस्तुत अध्ययन में कार्योत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के कक्षा–9 एवं 10 के 169 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में सुनील कुमार उपाध्याय एवं अल्का सक्सेना द्वारा निर्मित 'उपाध्याय–सक्सेना सोशियो– इकोनॉमिक स्टेट्स स्केल' एवं डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डा0 आर0पी0 सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण (एनोवा) सांख्यिकी विधि एवं टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है। सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक के साथ–साथ सम्पूर्ण समायोजन में भिन्नता प्राप्त हुयी। इस भिन्नता को कम करने के लिए सरकारी, गैर सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में प्रयास किये जा रहे है किन्तु मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता को बढ़ाने के लिए साथ में पढ़ने वाले उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों का उन्हें सहयोग मिलने के साथ–साथ शिक्षकों को भी उन्हें सहयोग प्रदान करना चाहिए तथा मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के माता–पिता एवं अभिभावक को अपने बच्चों पर ध्यान देना चाहिए तथा उनके संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में आने वाली बाधाओं आर्थिक रूप से मदद न कर पाने पर अभिप्रेरित कर उनके समायोजन क्षमता को बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए।

की–वर्ड – माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, सामाजिक–आर्थिक स्तर, संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षिक समायोजन

प्रस्तावना– प्राचीन काल में मनुष्य की आवश्यकताएं सीमित थीं, जिनकी पूर्ति सुगमतापूर्वक हो जाती थी, परन्तु जैसे–जैसे सभ्यता का विकास हुआ एवं वैज्ञानिक क्रान्ति हुई वैसे–वैसे हम भौतिकता की ओर बढ़ते गए और हमारी आवश्यकताएं भी बढ़ती गई। आवश्यकताओं के बढ़ने के कारण इनको पूरा करना कठिन हो गया।

IJSRST11837309 | Received : 02 Oct 2017 | Accepted : 22 Oct 2017 | September-October-2017 [(3) 7: 1414-1421]

फलस्वरूप जीवन में तनाव एवं कुण्ठा का जन्म होने लगा। वर्तमान समय में मानव अनेक वैज्ञानिक साधनों से सम्पन्न है, फिर भी उसके चारों ओर समस्याएं ही समस्याएं हैं, जिसके कारण उसकी विभिन्न प्रकार की बढ़ती हुई आवश्यकताएं हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से ही मनोविकार का जन्म होता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन निर्वाह की प्रक्रिया में नित्य नवीन आवश्यकताओं का अनुभव करता है और उन्हें पूरा करने का प्रयास भी करता है। यदि आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है तो समायोजित व्यक्तित्व का विकास होता है, परन्तु इसके विपरीत यदि आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है तो व्यक्ति तनाव एवं हीनभावना का अनुभव करने लगता है। फलस्वरूप उसका व्यक्तित्व कुसमायोजित हो जाता है।

जीवन में सफलता का महत्वपूर्ण स्थान है, किन्तु यह सफलता व्यक्ति तभी प्राप्त कर सकता है, जबकि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसने समायोजन स्थापित कर लिया हो। स्पष्ट है कि समायोजन सफलता एवं आनन्द का आधार है, इसलिए मानव जीवन का उद्देश्य प्रत्येक क्षेत्र में समायोजन स्थापित करना होना चाहिए। इसके लिए व्यक्ति को निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए।

आस–पास के सामाजिक, भौतिक, आध्यात्मिक वातावरण से उपयुक्त सामन्जस्य प्राप्त करना शिक्षित एवं विकसित मानव का एक प्रमुख गुण होना चाहिए। यह सामन्जस्य इस भांति होना चाहिए कि इससे व्यक्ति और समाज दोनों का हित हो। इसी प्रकार मनुष्य को अपनी इच्छाओं, संवेगों तथा शारीरिक एवं मानसिक उद्वेगों से भी उत्तम सामन्जस्य स्थापित करना आवश्यक है। शिक्षा द्वारा बालकों को उपयुक्त वातावरण एवं परिस्थिति से सामन्जस्य स्थापित करने का अभ्यास कराने की आवश्यकता होती है। इस सन्दर्भ में प्रमुख विद्वानों के कथन निम्नलिखित हैं–

पेस्टालॉजी के अनुसार, ''मानव की आन्तरिक शक्तियों का स्वाभाविक, सामन्जस्यपूर्ण एवं प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है''।

टैगोर के शब्दों, ''सर्वोच्च शिक्षा वह है, जो हमें केवल सूचनाएं नहीं देती, वरन् हमारे जीवन व सम्पूर्ण सृष्टि में सामन्जस्य स्थापित करती हैं''।

आजकल युवा पीढ़ी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में असमर्थ हो रही है, जिसके कारण उनमें अनुशासनहीनता, कुण्ठा, असन्तोष एवं अराजकता की भावना का विकास हो रहा है और कुसमायोजित व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा है।

वर्तमान सामाजिक संरचना ऐसी जटिल हो गयी है कि आज का युवा वर्ग अपने मार्ग से विचलित हो गया है। प्रायः युवाओं का आकांक्षा स्तर बहुत ऊंचा हो गया है और इनकी पूर्ति न होने पर उनमें निराशा उत्पन्न हो जाती है। फलस्वरूप वे असामाजिक और अवांछनीय कार्य करने लगते हैं और उनका व्यक्तित्व कुसमायोजित हो जाता है। यदि हमारा युवा वर्ग कुसमायोजित हो जाएगा तो हमारे राष्ट्र व समाज का ही नहीं, वरन् समस्त विश्व का भविष्य खतरे में पड़ जाएगा। प्रायः कठोर सामाजिक परम्पराएं, मूल्य, प्रतिमान, आदर्श, मान्यताएं एवं अवधारणाएं बालकों के व्यक्तित्व के सुगम विकास में बाधक सिद्ध होती है। सामाजिक दबाव बालकों के स्वतंत्र स्वाभाविक विकास की प्रक्रिया का गला ही घोंट देते हैं। बालक विवश होकर इन कठोर मूल्यों, आदर्शों, परम्पराओं आदि को स्वीकार करता है या अस्वीकार करके विद्रोह करता है। उसके इस विद्रोह का असमायोजन की संज्ञा दी जाती है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए समायोजन अत्यन्त आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ न कुछ समस्याएं अवश्य आती हैं। व्यक्ति की प्रभावशीलता इन समस्याओं से ज्ञात नहीं होती है, बल्कि उसकी प्रभावशीलता इस बात से ज्ञात होती है कि वह इन समस्याओं का सामना किस प्रकार करता

है? यदि व्यक्ति समस्याओं का सामना करने में सफल है तो हम कहेंगे कि वह समायोजित है और यदि व्यक्ति समस्याओं का सामना करने में सफल नहीं होता है और तनाव, निराशा व हीनभावना का शिकार हो जाता है तो उसे हम असमायोजित व्यक्ति कहेंगे। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है जहाँ एक तरफ उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावक अपने बच्चों को सुविधा प्रदान कर उनके समायोजन में मदद करते है वहीं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन में भी परेशानी होती है। कुछ शोध द्वारा यह देखा गया है कि **ओमप्रकाश (2013)** ने निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के गृह, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन में अन्तर पाया गया। **अनिता (2014)** ने निष्कर्ष में पाया कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले माध्यमिक विद्यार्थियों के समयोजन के बीच महत्त्वपूर्ण अन्तर पाया गया अर्थात् शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में समायोजन अधिक पायी गयी। **शनि, शीला के (2015)** ने निष्कर्ष में पाया कि– सांस्कृतिक रूप से वंचित एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन एवं व्यक्तिगत समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः पूर्व शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि लिंग, क्षेत्र, सामाजिक–आर्थिक स्तर पर विद्यार्थियों के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पाया जाता है। अतः वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में दिये जाने वाले सुविधाओं से विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता को बढ़ाने के लिए सरकारी, गैर सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में प्रयास किया जा रहा है जिसके उपरान्त अध्ययनकर्त्री द्वारा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को मद्देनजर अपने अध्ययन का विषय सामाजिक–आर्थिक स्तर पर विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है।

समस्या कथन–

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में उनके समायोजन क्षमता का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके संवेगात्मक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके सम्पूर्ण समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों के आधार पर निम्न परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर नहीं है।
2. उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर नहीं है।
3. उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में अन्तर नहीं है।
4. उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन में अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में कार्योत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के कक्षा–9 एवं 10 के 169 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में सुनील कुमार उपाध्याय एवं अल्का सक्सेना द्वारा निर्मित 'उपाध्याय–सक्सेना सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स स्केल' एवं डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डा0 आर0पी0 सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण (एनोवा) सांख्यिकी विधि एवं टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके संवेगात्मक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–

H_1 उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर है।

H_{01} उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर नहीं है।

तालिका सं0 –1

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर को दर्शाते हुए एफ–अनुपात

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	117.27	58.63	3.68*	F.05(2,166)=3.06
समूहों के अन्दर	166	2660.64	15.93		
कुल	168	2777.90533	74.57		

*.05 स्तर पर सार्थक

तालिका सं0 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 3.68 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर df =(2, 166) पर सारणी मान 3.06 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इस सार्थक एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में भिन्नता है।

सारणी सं0 – 1.1

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थक / असार्थक
1.	उच्च	58	13.12	0.69	1.48	2.15	सार्थक
	मध्यम	81	11.64				
2.	उच्च	58	13.12	0.90	2.19	2.44	सार्थक
	निम्न	30	10.93				
3.	मध्यम	81	11.64	0.85	0.71	0.83	असार्थक
	निम्न	30	10.93				

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन की विमा संवेगात्मक समायोजन के मध्यमानों के मध्य टी–मान क्रमशः 2.15, 2.44 एवं 0.83 है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक समायोजन मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है जबकि मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक समायोजन में अन्तर नहीं है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में भिन्नता है अर्थात् सामाजिक–आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन को प्रभावित करती है।

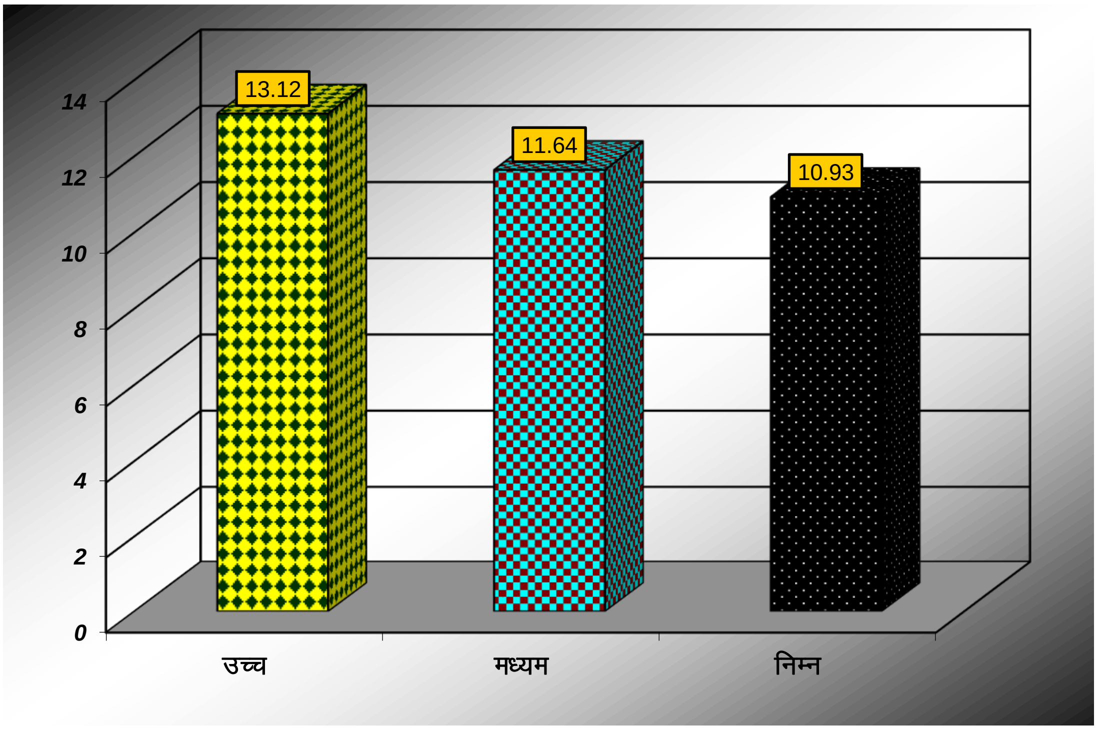

आरेख सं0 1

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमानों का दण्ड आरेख

2. विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–

H_2 **उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर है।**

H_{02} **उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर नहीं है।**

तालिका सं0 –2

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर को दर्शाते हुए एफ–अनुपात

स्रोत	**df**	**SS**	**MS**	**F**	**सारणी मान**
समूहों के मध्य	2	223.61	111.81	10.26*	F.05(2,166)=3.06
समूहों के अन्दर	166	1818.98	10.89		
कुल	168	2042.59	122.70		

*.05 स्तर पर सार्थक

तालिका सं0 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 10.26 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर df =(2, 166) पर सारणी मान 3.06 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इस सार्थक एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में भिन्नता है।

सारणी सं0 – 2.1

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात

क्र. सं.	**चर**	**न्यादर्श (N)**	**मध्यमान (M)**	**σ_D**	**D**	**t-मान**	**सार्थक / असार्थक**
1.	उच्च	58	13.09	0.69	1.32	1.92	**असार्थक**
	मध्यम	81	11.77				
2.	उच्च	58	13.09	0.90	3.35	3.74	**सार्थक**
	निम्न	30	9.73				
3.	मध्यम	81	11.77	0.85	2.03	2.38	**सार्थक**
	निम्न	30	9.73				

सारणी संख्या 2.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन की विमा सामाजिक समायोजन के मध्यमानों के मध्य टी–मान क्रमशः 1.92, 3.74 एवं 2.38 है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है जबकि उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन में अन्तर नहीं है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में भिन्नता है अर्थात् सामाजिक–आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन को प्रभावित करती है।

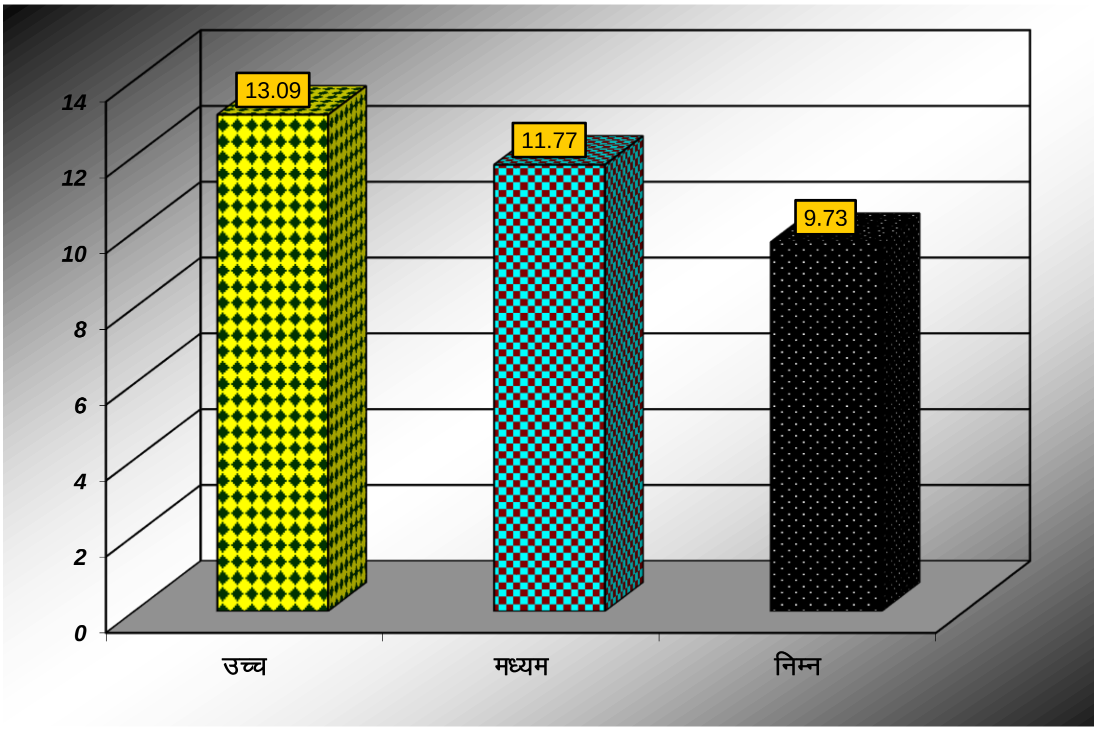

आरेख सं0 2

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के मध्यमानों का दण्ड आरेख

3. विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–

H_3 **उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर है।**

H_{03} **उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में अन्तर नहीं है।**

तालिका सं0 –3

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में अन्तर को दर्शाते हुए एफ–अनुपात

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	69.29	34.65	1.84	F.05(2,166)=3.06
समूहों के अन्दर	166	3150.42	18.86		
कुल	168	3219.71598	53.51		

*.05 स्तर पर असार्थक

तालिका सं0 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 1.84 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर df =(2, 166) पर सारणी मान 3.06 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इस सार्थक एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में भिन्नता नहीं है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन एक–दूसरे के समान है।

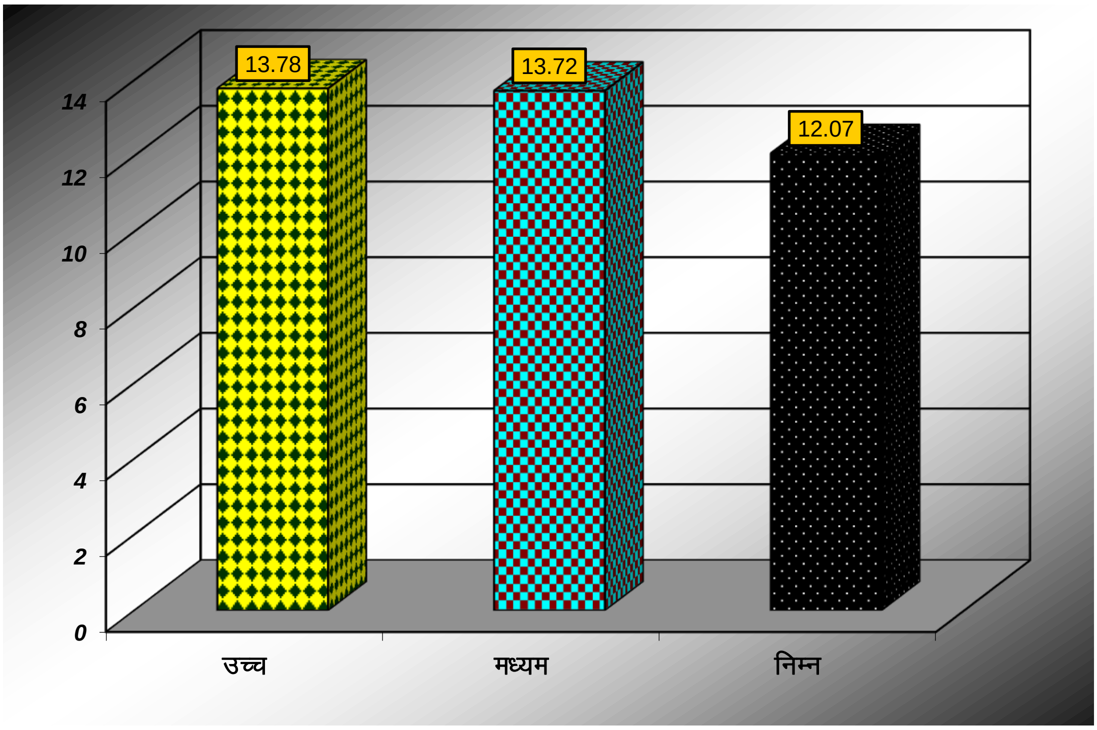

आरेख सं0 3

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के मध्यमानों का दण्ड आरेख

4. विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके सम्पूर्ण समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–

H_4 **उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन में अन्तर है।**

H_{04} **उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन में अन्तर नहीं है।**

तालिका सं0 –4

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन में अन्तर को दर्शाते हुए एफ–अनुपात

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	1045.49	522.74	11.78*	F.05(2,166)=3.06
समूहों के अन्दर	166	7413.61	44.39		
कुल	168	8459.10059	567.14		

*.05 स्तर पर सार्थक

तालिका सं0 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 11.78 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर df =(2, 166) पर सारणी मान 3.06 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इस सार्थक एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन में भिन्नता है।

सारणी सं0 – 4.1

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थक / असार्थक
1.	उच्च	58	39.98	1.15	2.86	2.49	सार्थक
	मध्यम	81	37.12				
2.	उच्च	58	39.98	1.50	7.25	4.84	सार्थक
	निम्न	30	32.73				
3.	मध्यम	81	37.12	1.42	4.39	3.08	सार्थक
	निम्न	30	32.73				

सारणी संख्या 4.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन की विमा समायोजन के मध्यमानों के मध्य टी–मान क्रमशः 2.49, 4.84 एवं 3.08 है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की समायोजन निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है जबकि उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की समायोजन में अन्तर है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन में भिन्नता है अर्थात् सामाजिक–आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करती है।

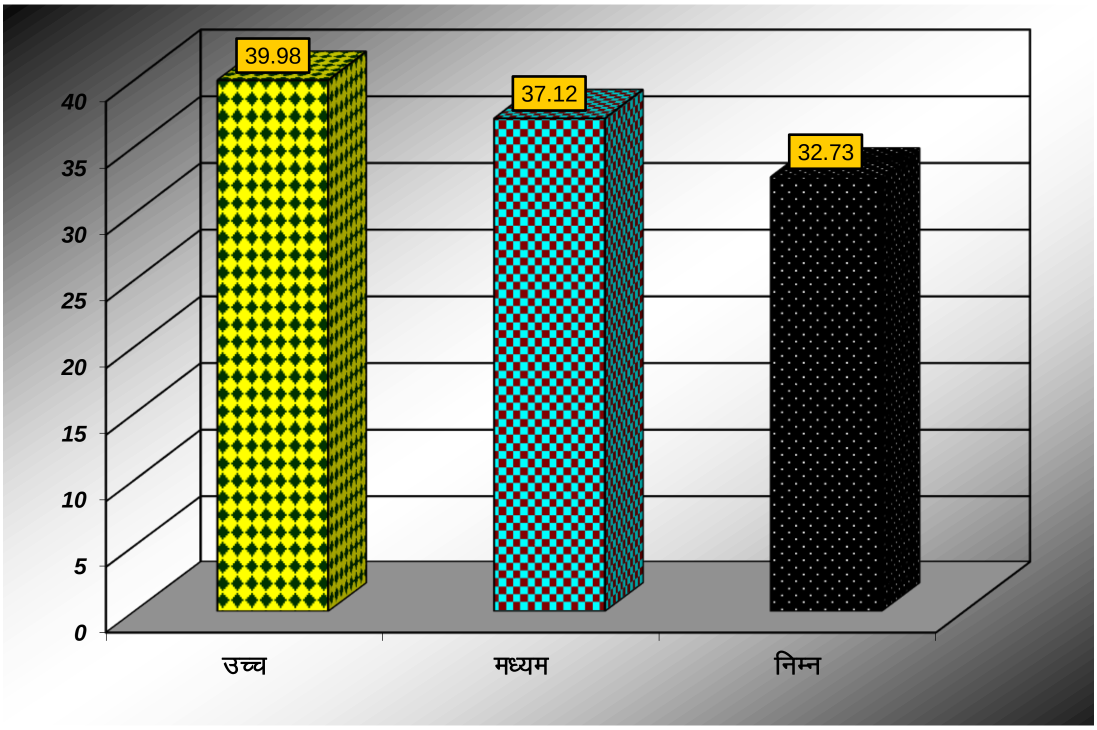

आरेख सं0 4

उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों का दण्ड आरेख

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन एक–दूसरे से भिन्न है अर्थात् सामाजिक–आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन को प्रभावित करती है।
- उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन एक–दूसरे से भिन्न है अर्थात् सामाजिक–आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन को प्रभावित करती है।
- उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन एक–दूसरे से भिन्न है अर्थात् सामाजिक–आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करती है।
- उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन एक–दूसरे से भिन्न है अर्थात् सामाजिक–आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के सम्पूर्ण समायोजन को प्रभावित करती है।

सुझाव–

सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक के साथ–साथ सम्पूर्ण समायोजन में भिन्नता प्राप्त हुयी। इस भिन्नता को कम करने के लिए सरकारी, गैर सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में प्रयास किये जा रहे है किन्तु मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता को बढ़ाने के लिए साथ में पढ़ने वाले उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों का उन्हें सहयोग मिलने के साथ–साथ शिक्षकों को भी उन्हें सहयोग प्रदान करना चाहिए तथा मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के माता–पिता एवं अभिभावक को अपने बच्चों पर ध्यान देना चाहिए

तथा उनके संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में आने वाली बाधाओं आर्थिक रूप से मदद न कर पाने पर अभिप्रेरित कर उनके समायोजन क्षमता को बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. ओमप्रकाश (2013). माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासन, आत्म–प्रत्यय एवं समायोजन का अध्ययन, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान
2. अनिता (2014). कार्यकारी व ग्रहिणी महिलाओं के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि व समायोजन पर परिवार की प्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान
3. शनि, शीला के. (2015). सोशियो–पर्सनल एडजेस्टमेण्ट एण्ड एचिवमेन्ट ऑफ कल्चर्ली डिसएडवाण्टेजेड, सेकेण्डरी स्कूल पीपल्स, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, महात्मा गाँधी यूनिवर्सिटी, कोट्टयम, केरला।
4. सिंह, अमित कुमार (2017). अनुदानित तथा गैर अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन, रिसर्च मैग्मा– एन इण्टरनेशनल मल्टीडिस्पिलनरी जर्नल, वॉल्यूम–1, इश्शू–10, पृ0 1–4
5. कौर, देवेन्द्र (2018). माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, चेतना इण्टरनेशनल एजुकेशनल जर्नल, वॉल्यूम–५, पृ0 204–209
6. शर्मा एवं कौशिक (2018). सीकर जिले के हाईस्कूल स्तर के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का अध्ययन, एरियो इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम–ग्प्ट।
7. शेखावत एवं सुथार (2018). शारीरिक चुनौतियुक्त विद्यार्थियों के समायोजन एवं स्वबोध का अध्ययन, शृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, वॉ0 5, इश्शू–5, पृ0 37–420